DR. BHIM RAO AMBEDKAR COLLEGE
(University of Delhi)

Main Wazirabad Road, Yamuna Vihar, Delhi-110094, Phones: 22814126, Telefax: 22814747

Email: info@drbrambedkarcollege.ac.in; brambedkarcollege.du@gmail.com;
principal@drbrambedkarcollege.ac.in; Website: www.drbrambedkarcollege.ac.in

Ref.No. BRAC/OP/Conf./2018-19/263 Dated: 02.06.2018

प्रेस विज्ञप्ति

संयुक्त राष्ट्र के प्लास्टिक प्रदूषण पर रोकथाम अभियान में डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज शामिल

दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज की ' पर्यावरण की चुनौतियां और "न्यू इंडिया" ' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू हो गयी है. नीरी (सीएसआइआर), नेशनल इन्वॉर्न्मेंट साइंस एकेडमी, दिल्ली (एनइएसए) और इन्वॉर्न्मेंटल एंड सोशल डेवलपमेंट एसोसिएशन, दिल्ली (इएसीडीए) जैसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त संस्थानों के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी में देश के कुल 22 अलग-अलग शहरों से 100 से भी ज्यादा पर्यावरणविद, वैज्ञानिक, पर्यावरण संरक्षक एवं शोधार्थी अपना शोध-पत्र एवं विचार प्रस्तुत करने जा रहे हैं.

ज्ञात हो कि संयुष्ट् राष्ट्र के विश्व पर्यावरण दिवस 2018 की थीम " प्लास्टिक प्रदूषण पर रोकथाम"(Beat Plastic Pollution) है . डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज ने संयुक्त राष्ट्र के इस अभियान से जुड़ने की कड़ी में ' पर्यावरण की चुनौतियां और "न्यू इंडिया" ' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने का निर्णय लिया. कॉलेज की यह पहल अब संयुक्त राष्ट्र के अभियान के साथ औपचारिक रूप में दर्ज है. इसके अन्तर्गत कॉलेज ने प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, पारंपरिक जीवन पद्धति, प्रदूषण के विविध रूप एवं विविध कचरों के निवारण संबंधी विषयों पर अलग-अलग विचार सत्र निर्धारित किया है. पिछले कुछ सालों से देश की राजधानी दिल्ली जिस तरह से प्रदूषण संकट से गुजर रही है, संगोष्ठी में 'दिल्ली-एनसीआर एवं पर्यावरण के सवाल' शीर्षक से स्वतंत्र सत्र आयोजित करने की योजना है. आयोजन समिति के सचिव डॉ. जितेन्द्र नागर ने संगोष्ठी की विस्तृत रूप-रेखा एवं अगले दो दिनों तक चलनेवाली गतिविधियों का ब्योरा देते हुए कहा कि इनमें शोध- पत्र प्रस्तुति एवं विचार-विमर्श के साथ-साथ बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण , पर्यावरण जागरुकता अभियान के तहत पोस्टर निर्माण एवं प्रदर्शन कार्य भी महत्वपूर्ण है.

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में देशभर से आए अतिथि वक्ताओं का स्वागत करते हुए कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. जी. के. अरोड़ा ने कहा कि 21वीं सदी जल संकट से जूझने की सदी होने जा रही है और ये पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर चुनौती होगी. ऐसे में देश के युवाओं को चाहिए कि वो पानी और पर्यावरण के सवाल को महज फैशन के स्तर पर न लेकर ठोस कार्रवाई करने की नीयत से समझने की कोशिश करें. कॉलेज अपने स्तर पर पर्यावरण को लेकर सचेत है और हमारी कोशिश है कि इसका बचाव हम पारंपरिक तरीके से करें.

भारत के वॉटरमैन नाम से मशहूर एवं मैग्सेसे अवार्ड विजेता राजेन्द्र सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि दुनिया के जितने देशों में अभी जो आपसी तनाव चल रहे हैं, उसके मूल में पानी पर कब्जे की रस्साकशी है. सीरिया का उदाहरण देते हुए उन्होंने विस्तार से बताया कि जिसे हम धार्मिक मतभेद, नस्ल और वैचारिक विभन्नता आधारित युद्ध कह रहे है वो किसी न किसी रूप में पानी पर इजारेदारी की लड़ाई है. भारत में अभी जो विस्थापन है, वो गांव से शहरों की तरफ है लेकिन यही स्थिति बनी रही तो शहर का भविष्य भी सुरक्षित नहीं रह सकेगा. राजस्थान में जलाशयों और नदियों को जिंदा करने के अपने जमीनी काम की विस्तार से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष पेरिस की सड़कों पर हमनें जिस तरह से पानी के सवाल को लेकर प्रदर्शन किए, उसका नतीजा है कि अब पर्यावरण के सवाल के तहत पानी से जुड़े मुद्दे भी संयुक्त राष्ट्र की चिंता में शामिल कर लिए गए हैं. सिंह का मानना है कि पानी से बचाव के लिए हमें

हर हाल में भारत के पारंपरिक तरीके की तरफ लौटना होगा. हमें विकास के नाम पर सिर्फ साइंस नहीं, कॉमन सेंस भी उपयोग में लाने की जरूरत है.

बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए इंटरनेशनल ज्योग्रफिकल यूनियन के जेनरल सेक्रेटरी प्रो. आर. बी. सिंह (दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनमिक्स, डीयू) ने कहा कि जब तक इस देश को गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक भेदभाव और पर्यावरण विघटन से रोका नहीं जाएगा, न्यू इंडिया की कल्पना करना जोखिम भरा काम है. पर्यावरण संकट से घिरा कोई भी देश बेहतर भविष्य के सपने देखता है तो उसे बाकी देशों से कई गुना ज्यादा मेहनत करने की जरूरत है. इसके लिए जरूरी है कि वो विकास के लिए न सिर्फ तकनीक और मशीन आधारित उद्योग पर निर्भर होता चला जाए बल्कि आजीविका और संरक्षण के जो पारंपरिक, सामुदायिक और ग्रामीण स्तर के तरीके हैं, उन्हें भी अपने साथ लेकर चले.

इन्वॉर्न्मेंट एंड डेवलपमेंट एसोसिएशन की कार्यकारी निदेशक गीतांजलि कौशिक ने इस दो दिवसीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किए जानेवाले शोध-पत्र का विस्तृत ब्योरा प्रस्तुत करते हुए कहा कि पर्यावरण का सवाल सिर्फ अध्ययन एवं विश्लेषण का विषय नहीं है. अंत में इसे हर हाल में 'एक्शन ऑरिएंटेड' होना होता है. इस संगोष्ठी का महत्व तब ज्यादा होगा जब इसके विमर्श को पर्यापरण जागरूकता अभियान का रूप दिया जाए.

नेशनल इन्वॉर्न्मेंटल साइंस एकेडमी, दिल्ली के अध्यक्ष एवं पर्यावरणविद् प्रो. जावेद अहमद ने कहा कि हमें प्लास्टिक मुक्त परिवेश की दिशा में गंभीरता से काम करने की जरूरत है. इसके लिए शहरीकरण, उपभोग, जीवनशैली आदि सवालों के साथ प्रकृति का क्या रिश्ता बनता है, इस सिरे से भी सोचना जरूरी है.

व्यक्तिगत स्तर पर साफ-सुथरा रहने और अपना घर स्वच्छ रखने की दिशा में भारतीय समाज तो फिर भी सचेत है लेकिन परिवेश की स्वच्छता को लेकर लोगों में अभी भी उत्साह एवं सहयोग की कमी है. बिना परिवेश की स्वच्छता के हम व्यापक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण की बात नहीं कर सकते. सीएसआइआर-नीरी, दिल्ली जोन सेंटर के वैज्ञानिक एवं प्रमुख एस.के.गोयल ने ये बातें पर्यावरण के सवाल को सामुदायिक स्तर के सवाल से जोड़ते हुए कही. उनका मानना है कि व्यक्तिगत एवं सामुदायिक प्रयासों के बिना बेहतर कल की उम्मीद नहीं की जा सकती.

उद्घाटन सत्र में पर्यावरण एवं न्यू इंडिया को लेकर हुई परिचर्चा पर अपना मत व्यक्त करते हुए कॉलेज की गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन दीपांशु श्रीवास्तव ने कहा कि पर्यावरण को बचाना, खुद को बचाए रखने की कोशिश से अलग नहीं है. इसे बचाने के अलावा इंसान के पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है. जैसे-जैसे समय बढ़ता चला जाएगा, यह संकट गहराता चला जाएगा. ऐसे में जरूरी है कि इसके प्रति सामूहिक स्तर की जिम्मेदारी ली जाए.

उद्घघाटन सत्र के औपचारिक समापन की घोषणा एवं धन्यवाद ज्ञापन करते हुए संगोष्ठी के संयोजक डॉ. एस.एस. चावला ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम सामूहिक चेतना एवं सहयोग के बिना संभव नहीं होते. इनमें बहुस्तरीय सहयोग एवं परामर्श की आवश्यकता होती है. संयोजक के तौर पर हम उन तमाम शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक एवं देशभर से आए अतिथि वक्ताओं एवं आयोजकों के शुक्रगुजार हैं कि वो पर्यावरण संकट जैसे गंभीर सवाल पर बातचीत करने में हमारा सहयोग कर रहे हैं. दो दिनों तक चलनेवाली इस बातचीत को आगे हम जागरूकता अभियान की दिशा में ले जाने की कोशिश करेंगे.

मीडिया प्रभारी

Col. S.S. Chawla

(Vinit Kr.)

Press Release

A two day National Conference on Environmental Challenges for 'New India' was organized by Environment and Social Development Association (ESDA), Delhi in collaboration with Dr. Bhim Rao Ambedkar College, University of Delhi and CSIR-National Environmental Engineering Research Institute & National Environmental Science Academy, Delhi on 2nd - 3rd June, 2018 at the auditorium of Dr. Bhim Rao Ambedkar College. The conference was organized on the occasion of World Environment Week 2018 Theme: Beat Plastic Pollution, where India is the global host.

The inaugural session commenced with the lighting of the lamp and with the release of "Souvenir & Abstracts" by the chief guests Dr. Rajendra Singh, water conservationist, also known as "Waterman" of India, Dr. R B Singh, Prof Department of Geography, DCE, DU, Dr. Geetanjali Kaushik, Executive Director, ESDA, Jawaharlal Nehru Engineering College, Aurangabad, Dr. Javed Ahmad, and Dr. S.K. Goyal.

Dr. Rajendra Singh spoke about the modern global problems and local traditional solutions. He said that the floods and droughts are mainly faced by low income communities, which leads to forced migration. He suggested use of local resources and technology for water harvesting system in India. He also talked about community based operation, i.e. community driven through de-centralization of water management. Dr. Rajendra Singh offered various solutions to conserve water, like understanding traditional systems and use of indigenous knowledge to prevent the formation of dangerous landscapes, mobilization of community around land water and forests, participation in rejuvenating old structures and construction of new structures and creation of new village level and river basin institutions. He also said that change in university curriculum is required which should be based on indigenous knowledge about water conservation.

Dr. R. B. Singh, Prof Department of Geography, DCE, talked about environmental challenges for the New India. He said that India's priority should be poverty eradication and sustainable growth. He also said that investing on education is the solution, which triggers progress of a country, as happened in Japan and China. Dr. R.B. Singh said that functional literacy is more important than knowledge creation. He said that science and social science have to come together and a sense of responsibility has to be generated amongst all. He talked about threatened biodiversity by flooding in fluvial environment while referring to development without destruction. He said that the New India must be based on local resource development and must work to increase the Global peace index.

Dr. Geetanjali Kaushik, Executive Director, ESDA, Jawaharlal Nehru Engineering College, Aurangabad, appreciated the efforts of the college to come up with this conference.

Dr. Javed Ahmad and Dr. S.K. Goyal emphasized on the importance of environmental change on an individual level.

Mr. Deepanshu Srivastava urged everyone to take away at least one suggestion from the conference and implement it to contribute towards environmental change.

After the inaugural session, a tree was planted by the chief guests in the college garden as an initiative for climate change.

The first technical session on the theme of “Air Pollution & Smog in Delhi-NCR and other Metro Cities; Global Warming and Climate Change” began in the auditorium right after lunch, wherein the panelists were Prof. Raj Kumar, Director, Vallabhbhai Patel Chest Institute, University of Delhi, Prof. B. R. Gurjar, Department of Civil & Env. Engineering, IIT Roorkee, Dr. Anil K. Srivastava, Former Chief Scientist & Additional Director, NMRL, DRDO, Mumbai, and Mr. Vikrant Tongad (Env. Conservationist) Founder Member, Social Action for Forest & Environment (SAFE) and Dr. S.K. Goyal shared their views on Air Pollution.